225 Glorious Years 2nd Battalion The Parachute Regiment (Special Force)

The Battalion was raised on 6 September 1797 for the Bombay Presidency as part of treaty with the Raja of Travancore as the 2nd Battalion, 5th Regiment Native Infantry of the Travancore Regiment. The Battalion's gallant role in the storming of Madgala in the Abyssinian Campaign (1867-68) earned it the honour of being designated as a Light Infantry Regiment.

In the First World War, the Battalion fought against the Turks in Mesopotamia and won laurels in action at Shaiba, Kut-El-Amara and Ctesiphon. In the Second World War, the Battalion won undying fame in the bloody assault on the formidable Italian fortress of Keren. Under 10 Indian Division in Italy, NK Yeshwant Ghadge was conferred with the **Victoria Cross** posthumously at Citta-de-Castello for his supreme act of valour.

The Battalion was selected for parachute duties under 2nd Indian Airborne Division in 1946 as 3rd Parachute Battalion, the Maharatta Light Infantry. In 1947, the battalion rushed to Jammu and Kashmir to stem the onslaught of Pakistani forces and fought legendary battles at Naushera and Jhangar.

On 15 April 1952, the Battalion became part of the Parachute Regiment Unit and was redesignated as Second Battalion, the Parachute Regiment. The Battalion took part in liberation of Goa in 1961. In 1965 Indo-Pak war, the Battalion saw action in Rann of Kutch and Lahore Theatres. In 1971, the Battalion won the distinction of carrying out the first airborne assault of the Indian Army by paradropping in the Eastern Sector and was the first Indian Army unit to enter Dacca.

From 1990-1991, the Battalion served in OP HIFAZAT (Counter Insurgency operations) in the North East. On 1st April 1999, the Battalion was selected for conversion to Special Forces. Immediately post conversion one team was inducted to Sierra Leone (UNAMSIL) to rescue Indian Army Hostages held by the rebel groups. It was one of its kind mission conducted by any country under the UN Flag and was executed perfectly and all hostages were rescued without any casualties.

In 2006, the Battalion was inducted in J&K and during this period, Captain R Harshan made supreme sacrifice during a pivotal operation and was posthumously awarded the Ashoka Chakra.

The Battalion witnessed history, as it oversaw the peaceful formation of the newest country in the world when Sudan was split into Sudan and South Sudan.

The Battalion has distinguished itself in Live Situation Training role in North East and Jammu&Kashmir and in counter terrorism role at Bengaluru after 26/11 attack. The unit has won Three Chief of Army Staff's Unit Citation, Governor of J&K Unit Appreciation, Two Army Cdr's Citation and a UN Force Commander Unit Citation. The 427 awards won by the Battalion include one Victoria Cross, four Mahavir Chakras, one Ashoka Chakra, two Kirti Chakra, 17 Vir Chakras, 07 Shaurya Chakras, 48 Sena Medals and one Yudh Seva Medal. Most impressively the Battalion has won 25 Battle Honours and 5 Theatre honours, making it one of the most decorated Battalion in the Indian Army today.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on 2nd Battalion, the Parachute Regiment (Special Force) on the occasion of its 50th Poongli Day, 225th Raising Day and 75th Jhangar Day.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

डाक विभाग
Department of Posts

२२५ स्वर्णिम वर्ष

द्वितीय छाताधारी पलटन पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल)

225 GLORIOUS YEARS

2nd BATTALION THE PARACHUTE REGIMENT (SPECIAL FORCES)

विवरणिका BROCHURE

225 स्वर्णिम वर्ष द्वितीय छाताधारी पलटन पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल)

बटालियन की स्थापना 6 सितंबर 1797 को त्रावणकोर के राजा के साथ एक संधि कें रूप में बॉम्बे प्रेसीडेंसी के लिए की गई थी। उस समय इस बटालियन को त्रावणकोर रेजिमेंट की 5 वीं रेजिमेंट नेटिव इन्फैंट्री के रूप में जाना जाता था। बटालियन द्वारा एबिसिनियन अभियान (1867–68) में मडगला पर आक्रमण के लिए वीरतापूर्ण भूमिका निभाने के परिणामस्वरूप इसने लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट होने सम्मान अर्जित किया।

प्रथम विश्व युद्ध में, बटालियन ने मेसोपोटामिया में तुर्कों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और शैबा, कुत–एल–अमारा और स्टेसीफोन में कार्रवाई करने के लिए प्रशंसा हासिल की। द्वितीय विश्व युद्ध में, बटालियन ने केरेन के दुर्जेय इतालवी किले पर खूनी हमले में अमर प्रसिद्धि प्राप्त की। इटली में 10 इंडियन डिवीजन के तहत, एन के यशवंत घडगे को उनके अद्भुत शौर्य एवं वीरता के प्रदर्शन के लिए उन्हें मरणोपरांत सित्ता–दे–केसतेलों में विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया।

बटालियन को 1946 में द्वितीय इंडियन एयरबोर्न डिवीजन के तहत पैराशूट ड्यूटी के लिए तीसरे पैराशूट बटालियन, महाराटा लाइट इन्फैंट्री के रूप में चुना गया। 1947 में, पाकिस्तानी सेना के आक्रमण को रोकने के लिए बटालियन को जम्मू एवं कश्मीर भेजा गया और वहां नौशेरा और झाँगर में असाधारण यद्ध लड़ा।

यह बटालियन 15 अप्रैल 1952 को पैराशूट रेजिमेंट यूनिट का एक भाग बन गई और इसे दूसरी बटालियन, पैराशूट रेजिमेंट के रूप में पुनः नया नाम एवं स्वरूप दिया गया। बटालियन 1961 में गोवा को मुक्त कराने वाली सैना का हिस्सा थी। 1965 के भारत–पाक युद्ध में, बटालियन ने कच्छ के रण और लाहौर थिएटर में अपना जौहर दिखाया । बटालियन ने 1971 में पूर्वी क्षेत्र में पैराड्रॉपिंग करके भारतीय सेना के पहले हवाई हमले को अंजाम देने का गौरव हासिल किया और यह बटालियन ढाका में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय सेना इकाई थी।

बटालियन ने 1990 से 1991 तक पूर्वोत्तर में ओपी हिफाजत (काउंटर इंसर्जेंसी ऑपरेशंस) को अंजाम दिया। बटालियन को 1 अप्रैल 1999 को स्पेशल फोर्स में परिवर्तित करने के लिए चुना गया। बटालियन को तुरंत स्पेशल फोर्स में परिवर्तित करते ही विद्रोही गुटों के कब्जे में बंधक बने भारतीय सेना के लोगों को छुड़ाने के लिए इसके एक दल को सिएरा लियोन (यूएनएएमएसआईएल) में शामिल कर दिया गया।

यह संयुक्त राष्ट्र के झंडे के तहत किसी भी देश द्वारा संचालित अपनी तरह का अनूठा अभियान था और इसे दक्षता के साथ बखूबी अंजाम दिया गया और सभी बंधकों को बिना किसी नुकसान के बचाया लिया गया।

बटालियन को 2006 में, जम्मू एवं कश्मीर में शामिल किया गया और इस अवधि के दौरान कैप्टन आर. हर्षन ने एक महत्वपूर्ण ऑपरेशन के दौरान सर्वोच्च बलिदान दिया तथा उन्हें मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया।

बटालियन ने इतिहास बनते देखा जब इनकी निगरानी में सूडान, सूडान और दक्षिण सूडान में विभाजित हुआ और विश्व में सबसे नए देशों का शांतिपूर्ण गठन हुआ।

बटालियन ने 26/11 के हमले के बाद पूर्वोत्तर और जम्मू–कश्मीर में सजीव प्रशिक्षण के दौरान तथा बैंगलुरु में आतंकवाद विरोधी भूमिका में स्वयं को उत्कृष्ठ सिद्ध किया है। यूनिट तीन चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ यूनिट साइटेशन, गवर्नर ऑफ जम्मू एण्ड कश्मीर यूनिट अप्रीशीऐशन, दो आर्मी कमांडर साइटेशन और एक यूएन फोर्स कमांडर यूनिट साइटेशन प्राप्त कर चुकी है। बटालियन द्वारा जीते गए 427 पुरस्कारों में एक विक्टोरिया क्रॉस, चार महावीर चक्र, एक अशोक चक्र, दो कीर्ति चक्र, 17 वीर चक्र, 07 शौर्य चक्र, 48 सेना पदक और एक युद्ध सेवा पदक शामिल हैं। सबसे प्रभावशाली, बटालियन ने 25 बैटल ऑनर्स और 5 थिएटर सम्मान जीते हैं, जिसके कारण यह बटालियन आज भारतीय सेना में सबसे सुशोभित बटालियनों में से एक बन गई है।

डाक विभाग दूसरी बटालियन, पैराशूट रेजीमेंट (स्पेशल फोर्स) के 50वें पूँगली दिवस, 225वें स्थापना दिवस और 75वें झाँगर दिवस के अवसर पर स्मारक डाक टिकट जारी करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक टिकटें	: 301850 प्रत्येक
Stamps Printed	: 301850 each
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00